8 वर्षों से निरंतर आपकी सेवा में....

"प्रयास" रिश्तों को जोड़ने का

अखिल भारतीय दिगम्बर जैन
विवाह योग्य युवक-युवती परिचय पत्रिका

फार्म जमा करने की अंतिम तिथि - 20 सितम्बर 2021

आयोजक - श्री गोलालारीय दिगम्बर जैन समाज न्यास एवं गोलालारीय दर्शन, इन्दौर

नवीनतम पासपोर्ट साईज के दो रंगीन फोटो प्लास्टिक या कागज के लिफाफे में रखकर पिन करें। फोटो के पीछे नाम पिता का नाम तथा स्थान अवश्य लिखें।

प्रत्याशी का विवरण

प्रत्याशी का नाम ____ शिक्षा (अंतिम) ____ व्यवसाय/सर्विस ____ वार्षिक आय रु. ____ प्रत्याशी का पता ____ चयन में प्राथमिकता (यदि हो तो) ____ वाट्सएप्प नंबर : ____

जन्मतिथि ____ समय ____ (रेलवे समयानुसार 0-24) स्थान ____ ऊँचाई ____ वजन ____ किलो वर्ण गोरा गेहुँआ सांवला

दिगम्बर (उपजाति) ____ गोत्र - स्वयं ____ मामा - गोत्र ____ मंगल - हाँ नहीं मांगली - हाँ नहीं (हाँ या नहीं पर ✓ करें)

भाई-बहन का विवरण: भाई (अंकों में) विवाहित अविवाहित; बहन (अंकों में) विवाहित अविवाहित

आवास: स्वयं का / किराये का (टिक ✓ करें)

प्रत्याशी का पारिवारिक विवरण

पिता का नाम श्री ____ पता ____ पिनकोड ____ व्यवसाय ____ वार्षिक आय ____ फो./मो. ____ नंबर ____

हेतु सम्पर्क: 1 श्री ____ मो. ____ नगर ____ 2 श्री ____ मो. ____ नगर ____

प्रविष्टि फार्म प्राप्त करने के लिए अपना नाम व मोबाइल नंबर लिखकर हमारी संस्था के मोबाइल नं. 9406934065 पर वाट्सएप्प मैसेज भेजकर प्राप्त कर सकते है। प्रविष्टि फार्म एवं बैंक में फंड ट्रांसफर या Paytm भुगतान का स्क्रीन शॉट हमें मो.: 9424013136 व prayaas.vivaah@gmail.com पर भेज सकते है।

घोषणा पत्र

मैं आवेदन पत्र के साथ रुपये 450/- चेक / ड्राफ्ट क्र. ____ बैंक ____ के नाम दिनांक ____ भेज रहा हूँ उपरोक्त आवेदन में समस्त जानकारी पूर्णतः सत्य है जिसके लिए मैं स्वयं उत्तरदायी हूँ तथा समस्त विवरण "प्रयास" रिश्तों को जोड़ने का परिचय पुस्तिका में प्रस्तुत कर रहा/रही हूँ। बैंक में नगद जमा करने पर प्रविष्टि शुल्क के साथ 60 रु. अतिरिक्त बैंक प्रभार जोड़े अर्थात् 510 रु. बैंक में जमा करें।

Paytm भुगतान 9424013136 के द्वारा भी किया जा सकता है।

पत्रिका प्रिंटिंग में त्रुटि रह जाने पर मैं समिति को उत्तरदायी नहीं ठहराऊंगा/ठहराऊंगी। पूर्ण नाम ____

हस्ताक्षर प्रत्याशी/पालक/अभिभावक

पत्रिका संपादक "राजेन्द्र जैन"

फार्म भरने की अंतिम तिथी 20 सितम्बर 2021 । पत्रिका 15 अक्टूबर 2021 के पश्चात आपको भेजी जावेगी ।

पत्रिका संपादक के नाम से प्रविष्टि पंजीयन व विज्ञापन राशि जमा करने हेतु आप अपना ड्राफ्ट/मल्टीसिटी चैक व फंड ट्रांसफर पेटीएम से भी कर सकते है - हिन्दी में - राजेन्द्र जैन अंग्रेजी में - RAJENDRA JAIN

* बैंक का नाम - एचडीएफसी बैंक * खाता क्रमांक - 50100439222846

* IFSC code : HDFC0000240 * ब्रांच - स्कीम नं. 54, इन्दौर

Paytm नंबर 9424013136 पर आप प्रविष्टि शुल्क 450/- रु. का भुगतान कर प्रविष्टि फार्म इसी वाट्सएप्प नंबर पर भेज सकते हैं।

विज्ञापन शुल्क - फुल्ल पेज (बायोडाटा मय विज्ञापन) - 5000 रु. * अंदर के रंगीन पेज - 4000 रु.

आपके द्वारा प्रेषित विज्ञापन की राशि प्राप्त होने पर ही विज्ञापन प्रकाशित किया जावेगा।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करे - मो.: 9424013136, 9425903301, 9329524227

कोरोना संकट के बीच चातुर्मास और हमारे दायित्व

डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर । वर्ष में चार माह वर्षा के दौरान जीवों की उत्पत्ति अत्याधिक होती है। जीवों की रक्षा व अहिंसा धर्म के पालनार्थ जैन मुनि चार माह पदयात्रा नहीं करते हैं और एक ही स्थान व नगर में रहकर स्वयं साधना करते है और श्रावकों को ज्ञान, ध्यान, धर्म लाभ प्रदान करते हैं। यह वर्षायोग आषाढ़ सुदी चतुर्दशी से कार्तिक वदी चतुर्दशी तक हर साल होता है। इसे चातुर्मास कहते हैं। स्वयं को पाप से मुक्त करने की कला के जागरण एवं संत समागम के अद्भुत क्षण का नाम है चातुर्मास । चातुर्मास में अंदर बाहर दोनों जगह बारिश होती है। बाहर की बारिश तन को पवित्र करती है, वहीं अंदर की बारिश यानी ज्ञानामृत की बारिश से मन का कोना-कोना पवित्र एवं सुगन्धित हो उठता है।

देशभर में संतों के चातुर्मास शुरु हो गये है । कोरोना संकट अभी टला नहीं है लेकिन जिस प्रकार से चातुर्मास कलश स्थापना में जगह-जगह भारी भीड़ देखी गयी वह चिंता की लकीरें बढ़ाती हैं। भक्तों की भारी भीड़ लेकिन न सभी को मास्क अनिवार्य, न सैनिटाइजर की व्यवस्था, न दो गज दूरी का पालन, ऐसे में हमारी धरोहर संतो की सुरक्षा, स्वास्थ्य के साथ खिलवाड नहीं कर रहे तो क्या है ? दूर दूर से आकर लोग आयोजन में शामिल हुए लेकिन आयोजन समिति ने कोविड प्रोटोकाल का कितना ध्यान रखा । सावधानी हटी, दुर्घटना घटी। लेकिन हम तब जागते हैं जब दुर्घटना घट जाती है। इस प्रवृत्ति से हमें बचना होगा । हमें अभी भी बहुत सजग होकर कार्य करना होगा । संबंधित समाज के पदाधिकारियों को इस ओर बहुत ही ध्यान देने की जरुरत है। हमेशा की तरह चातुर्मास कलश स्थापना में बोलियों में बड़ी धनराशि भी दान के रुप में एकत्रित हुयी है। अच्छी बात है इसका सदुपयोग ही होगा लेकिन हम सब यह भी जानते हैं कि कोरोना की वजह से हमारे अनेको साधर्मी भाइयों पर संकट के बादल आये हैं, कई लोगों ने परिवार का मुखिया खोया है, कई बच्चे अनाथ हो गये हैं, मानो उन पर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा है। कईयों का रोजगार छूट गया है, किसी का सुहाग छीन गया है। ऐसे में क्या चातुर्मास में कलश स्थापना की बोलियों में से कुछ प्रतिशत की राशि राष्ट्रीय जैन आपदा कोष बनाकर उसमें जमा कर जरुरतमंद अपने जैन भाइयों की मदद के लिए नहीं दे सकते । मुझे पता है काम कठिन है, पर यदि पहल की जाये तो यह हो सकता है। यदि यह हो गया तो एक बहुत बड़ा कार्य होगा, जिसके लिए उन जरुरतमंद साधर्मी भाईयों की अनेक दुआयें मिलेंगी। इस प्रकार के राष्ट्रीय स्तर पर एक स्थायी कोष की बहुत जरुरत है।

कोरोना संकट का प्रभाव इस बार भी संतों के चातुर्मास पर दिखाई देगा। आमतौर पर चातुर्मास के दौरान हजारों भक्तों की भीड़ रहती है लेकिन इस बार भी कोरोना संक्रमण के कारण भीड़ भाड़ वाले आयोजनों से बचना चाहिए । जो आयोजन हो उसमें आयोजक मंडल को कोविड से बचाव के सारे प्रबंध करना चाहिए, भगवान भरोसे व्यवस्थाएं छोड़कर आयोजन करना मुश्किल खड़ी कर सकता है। चातुर्मास का सही मूल्यांकन श्रावकों और श्राविकाओं द्वारा लिए गए स्थायी संकल्पों एवं व्रतों से होता है। यह समय आध्यात्मिक क्षेत्र में लगातार नई ऊंचाइयों को छूने हेतु प्रेरित करने के लिए है । अध्यात्म जीवन विकास की वह पगडंडी है जिस पर अग्रसर होकर हम अपने आत्मस्वरुप को पहचानने की चेष्टा कर सकते है । साधु-साध्वियों के भरसक सकरात्मक प्रयासों की बदौलत कई युवा धर्म की ओर उन्मुख होकर नया ज्ञान-ध्यान सीखकर स्वयं के साथ दूसरों के कल्याण की सोच हासिल करते हैं।

श्रावक और संत के जुड़ाव का वाहक चातुर्मास दो किनारों को जोड़ने का काम करता है। धर्मरूपी रथ को चलाने के लिए दो पहिये हैं, एक श्रावक और दूसरा संत । इन दोनों को एक-दूसरे से जोड़ने का काम करता है चातुर्मास । इस काल में दोनों ही एक दूसरे को समझते हैं और श्रावक साधु की साधना में सहयोगी बनकर उन सब साधनों को उपलब्ध करवाता है, जो उसकी साधना में अत्यंत आवश्यक हैं और साधु, श्रावक को पाप और कषाय से बचने का मार्ग बताकर , उसके पापों का प्रक्षालन करने के लिए प्रायश्चित देता है। इन चार महीनों में कई धार्मिक पर्व आते हैं, जो मनुष्य को धर्म अध्यात्म के करीब लाने का कार्य करते हैं। चातुर्मास मन, वचन और शरीर को शुद्ध करने का पर्व है । श्रमण संस्कृति के श्रमण संविधान में चातुर्मास जहाँ आध्यात्मिक जाग्रति का पर्व है वहीं जीवदया, करुणा, मैत्री, प्रमोद और अहिंसा का महान पर्व भी है। इसमें चतुर्विध संघ अपने व्रतों की सीमाओं में रहकर आत्म विशुद्धि को बढ़ाते है। जिनवाणी की आराधना संरक्षण, संवर्धन के साथ-साथ समाज को धर्म से जोड़कर विश्व कल्याण की भावना में संलग्न रखते है। चातुर्मास जैन परम्परा में साधना का विशेष अवसर माना जाता है। इसलिए इस काल में वे आत्मा से परमात्मा की ओर वासना से उपासना की ओर, अहं से अर्हं की ओर, आसक्ति से अनासक्ति की ओर, भोग से योग की ओर, हिंसा से अहिंसा की ओर, बाहर से अंदर की ओर आने का प्रयास करते है । चातुर्मास को चिन्तनमास के रुप में मनायें, ऊर्जा संग्रह का मापक बनाएं, धर्म से भटके हुए हुए, सही मार्ग पकड़ने का प्रकाश बनाये । ज्ञान का अर्जन करने का प्रयास करें, विनय, शालीनता, अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, सरल बनने की दिशा में चार कदम चलने का प्रयास करें। बाहरी ही नहीं, भीतर की भी सफाई करें । दूसरों के गुण और अपने दोषों का अवलोकन करें।

कोरोना काल में चातुर्मास : कोरोना संक्रमण को देखते हुए मंदिरों में शारीरिक दूरी व मास्क अनिवार्य अंग बनना चाहिये । हमारे पूज्य साधु-संत शुरु से ही इस महामारी से बचने के लिए भक्तों को प्रेरित कर रहे हैं, चातुर्मास के दौरान साधु-संतों को स्वयं भी भक्तों को सावधानी के लिए सचेत करते रहना आवश्यक है क्योंकि उनके द्वारा उपदिष्ट बातों का भक्तों पर अधिक व जल्दी असर होता है।

इन बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है : ※ भीड़भाड़ वाले आयोजनों को न किया जाये, यदि आयोजन होता है तो कोविड सुरक्षा के सम्पूर्ण प्रबंध आयोजन समिति गंभीरता पूर्वक करें । मात्र औपचारिता न निभाये । ※ हाथों को सैनेटाइज करके ही मंदिर में प्रवेश करें । प्रत्येक मंदिर कमेटी का कर्तव्य बनता है कि मंदिर के दरवाजे पर हाथ साफ करने के लिए आवश्यक सुविधा उपलब्ध कराये जाये तथा दरवाजे पर देखरेख के लिए कर्मचारी/माली की नियुक्ति हो । ※ सर्दी, खांसी, बुखार आदि के लक्षणों वाले, लंबी बीमारी वाले व्यक्ति कदापि मंदिर में प्रवेश न करें। ※ साधु-संतों के चरण स्पर्श बिल्कुल न करें, दूर से ही उन्हें नमन करें। ※ मंदिर के किसी भी उपकरण का उपयोग न करें। मंदिर परिसर के घंटा, पुस्तकें-शास्त्र, जाप माला, पंखे के स्विच, पूजन के बर्तन, पूजन के कपडे आदि घर से ही लाने का प्रयास किया जाये । घर से शुद्ध कपड़े पहनकर जाये । ※ मुनि-आर्यिका संघ के पास सभी को दूरी का उचित ध्यान रखना अत्यंत जरुरी है, क्योंकि साधारण श्रावक जन को सब तरह की औषधियां लेने, किसी भी जगह आने-जाने, अस्पताल में भर्ती होने की सुविधा है लेकिन किसी साधु संत को कोई परेशानी आ गयी तो फिर क्या उपाय होगा क्योंकि सभी जानते हैं कि जैन साधु न तो अस्पताल में इलाज कराते हैं न ही अंग्रेजी कोई भी दवा लेते है । साथ ही उनकी कठोर दिनचर्या भी रहती है । ※ अधिक समय तक मंदिर में न रहे, आपकी छोटी सी भूल बहुत भारी हो सकती है । ※ चातुर्मास के दौरान अनेक पर्व आयेंगे। इन्हें शासन-प्रशासन की गाइडलाइन के साथ स्वयं तथा दूसरे को सुरक्षित रखते हुए मनाना है । कोई जोर-जबरजस्ती न करें। ※ दो गज दूरी मास्क है जरुरी स्लोगन लिखने-बोलने मात्र के लिए नहीं है इनका पालन भी करना जरुरी है ।